

Topic 1 :- नई संसद भवन की सुरक्षा अब cisf के हाथ में

चर्चा में क्यों :- अभी तक भारतीय संसद की सुरक्षा सीआरपीएफ के जवान करते थे परंतु हाल ही में हुए एक घटनाक्रम के कारण यह सुरक्षा व्यवस्था की जिम्मेदारी अब सीआईएसएफ को सौंप दी गई है।



सीआईएसएफ न सिर्फ नई संसद भवन की सुरक्षा बल्कि पुरानी संसद भवन की सुरक्षा भी करेगी।

सीआईएसएफ को यह जिम्मेदारी देने का कारण :- पिछले वर्ष 13 दिसंबर को संसद भवन में कुछ व्यक्ति घुस गए थे इस कारण अफरा तफरी का माहोल बन गया था। जिसके कारण संसद भवन की सुरक्षा पर गंभीर सवाल उठे थे

संसद भवन के ऊपर 2001 में भी आतंकी हमला हो चुका है जिसमें सीआरपीएफ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी सीआरपीएफ ने अन्य सुरक्षा एजेंसियों के साथ मिलकर इन आतंकवादियों को खत्म किया था जिसमें सीआरपीएफ के जवानों को भी नुकसान हुआ था।

सीआईएसएफ :- केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल

CISF :- Central Industrial Security Force

सीआईएसएफ केंद्रीय गृह मंत्रालय के अधीन एक केंद्रीय सशस्त्र बल है इसका गठन 'केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल अधिनियम, 1968' के तहत किया गया था।

CISF के कार्य :-

1. देश के भीतर स्थित औद्योगिक, सरकारी महत्वपूर्ण इमारतों एवम इकाइयों, सरकारी अवसंरचना परियोजनाओं और सुविधाओं और प्रतिष्ठानों आदि की सुरक्षा व्यवस्था करना।
2. देश में मौजूद परमाणु ऊर्जा संयंत्रों, तेल क्षेत्रों, रिफाइनरियों, मेट्रो रेल, खदानों, प्रमुख बंदरगाहों, हवाई अड्डों आदि जैसे औद्योगिक इकाइयों की सुरक्षा करना।

भारत में कार्यरत अन्य सशस्त्र बल :-

1. सीमा सुरक्षा बल (Border Security Force-BSF)

कार्य :- भारत तथा पाकिस्तान और भारत तथा बांग्लादेश सीमा की सुरक्षा

2. केंद्रीय रिज़र्व पुलिस बल (Central Reserve Police Force-CRPF)

पुलिस कार्रवाई में राज्य / संघ शासित प्रदेशों की सहायता, कानून-व्यवस्था और आतंकवाद विरोध में निहित है।

3. भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (Indo-Tibetan Border Police-ITBP)

भारत-चीन सीमा की सुरक्षा

4. सशस्त्र सीमा बल (Sashastra Seema Bal-SSB) शामिल हैं।

भारत तथा भूटान सीमा की सुरक्षा। एसएसबी के नेपाल-भूटान सीमा से लगे राज्यों में सेंटर्स मौजूद हैं। जिसमें उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश शामिल है।

5. असम राइफल्स (ASSAM RIFLES)

भारत-चीन और भारत-म्यांमार सीमा की सुरक्षा

Topic 2:- कोयला और लिग्नाइट देश में ऊर्जा सुरक्षा का मुख्य आधार

चर्चा में क्यों :- देश में बढ़ती ऊर्जा जरूरत को पूरा करने में कोयला और लिग्नाइट मुख्य आधार रहे हैं, साथ ही नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र और सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम भी अपना योगदान देने में पीछे नहीं हैं।



लिग्नाइट के उत्पादन में तमिलनाडु मुख्य राज्य रहा है। भारत में नवीनतम आंकड़ों के अनुसार तमिलनाडु देश में लिग्नाइट का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है।

केंद्रीय कोयला मंत्रालय ने 2022-23 में लिग्नाइट से संबंधित आंकड़े जारी किए थे जिनके अनुसार, इसके उत्पादन में तमिलनाडु का हिस्सा सबसे अधिक 49.97% था, इसके बाद गुजरात का 27.37% और राजस्थान का 22.67% था।

एनएलसी इंडिया लिमिटेड, इसका मुख्यालय तमिलनाडु के नेवेली में स्थित है, यह लिग्नाइट के उत्पादन में अधिक योगदान प्रदान करता है।

एनएलसी इंडिया लिमिटेड (एनएलसी) :- (पहले इसे नेवेली लिग्नाइट कॉर्पोरेशन इंडिया लिमिटेड के नाम से जाना जाता था) यह भारत सरकार के कोयला मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत कार्य करने वाला एक केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है।

भारत में कोयला :- कोयला एक जीवाश्म ईंधन है यह एक ऐसा जीवाश्म ईंधन है जो सबसे अधिक मात्रा में पाया जाता है यह पृथ्वी के आंतरिक भागों में पाया जाता है इसका निर्माण पेड़ पौधों के जलने से होता है

कोयले को 'ब्लैक गोल्ड' के नाम से भी जाना जाता है।

कोयले के उपयोग :- घरेलू ईंधन के रूप में, भारी उद्योगों ने (लोहा, इस्पात) भाप इंजन में और बिजली संयंत्रों में।

- कोयला का वर्तमान में मुख्य उपयोग बिजली बनाने के लिए किया जाता है जिसे 'थर्मल पावर' कहा जाता है।
- चीन, भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और इंडोनेशिया दुनिया के पांच प्रमुख कोयला उत्पादक देश हैं
- देश में प्रमुख कोयला उत्पादक राज्य ओडिशा, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल हैं

भारत में प्राप्त कोयले की समस्या :-

भारत में प्राप्त कोयले में राख की मात्रा सबसे अधिक होती है देश में प्राप्त कोयले में 35 से 45% राख होती है जबकि विश्व के अन्य भागों में प्राप्त कोयले में राख की मात्रा केवल 15% होती है।
भारत में प्राप्त कोयले की राख में सल्फर की मात्रा लगभग 0.5% होती है

कोयले का वर्गीकरण: - कोयला मुख्य रूप से चार प्रकार का पाया जाता है
एन्थ्रेसाइट, बिटुमिनस, लिग्नाइट और पीट।

एन्थ्रेसाइट :- इस प्रकार के कोयले में कार्बन की मात्रा सबसे अधिक (80-95%) पाई जाती है
भारत में, यह केवल जम्मू और कश्मीर में पाया जाता है।

बिटुमिनस :- कार्बन की मात्रा 60-80% तक होती है
बिटुमिनस कोयला भारत के पश्चिम बंगाल, ओडिशा, झारखंड, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में पाया जाता है।

लिग्नाइट :- कार्बन की मात्रा - 40-55%,
लिग्नाइट में नमी उच्च पाई जाती है
लिग्नाइट कोयला भारत के राजस्थान, लखीमपुर (असम) तथा तमिलनाडु में पाया जाता है।

पीट :- कार्बन की मात्रा :- 40% तक

भारत में कोयले के महत्वपूर्ण क्षेत्र :-

गोंडवाना कोयला क्षेत्र :- यह क्षेत्र लगभग 250 मिलियन वर्ष पुराना है भारत में प्राप्त होने वाले 98% कोयला भंडार जबकि कुल उत्पादन का 99% कोयल केवल गोंडवाना क्षेत्रों से प्राप्त किया जाता है।
भारत में बेहतर गुणवत्ता वाला कोयला गोंडवाना क्षेत्र से ही प्राप्त होता है।

इस प्रकार के कोयले की प्राप्ति के मुख्य स्थल इस प्रकार है महानदी (छत्तीसगढ़-ओडिशा), दामोदर (झारखंड-पश्चिम बंगाल), गोदावरी (महाराष्ट्र) और नर्मदा घाटी क्षेत्र है।

टर्शियरी कोयला क्षेत्र (15-60 मिलियन वर्ष पुराना):

इस प्रकार के कोयले में कार्बन की मात्रा अत्यधिक कम पाई जाती है किंतु नमी और सल्फर भरपूर पाई जाती है।
इस प्रकार के कोयला क्षेत्र भारत में अतिरिक्त प्रायद्वीपीय क्षेत्रों तक सीमित है।

स प्रकार के कोयला क्षेत्रों की प्राप्ति पश्चिम बंगाल में स्थित दार्जिलिंग की हिमालय की तलहटी, अरुणाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, असम, मेघालय, नगालैंड, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और केरल आदि क्षेत्रों से होती हैं।

Topic 3 :- जंपिंग स्पाइडर की नई प्रजाति

चर्चा में क्यों :- हाल ही में मकड़ियों की एक नई प्रजाति की खोज की गई है जिसे जंपिंग स्पाइडर के नाम से जाना जा रहा है।

केरल और तमिलनाडु में शोधकर्ताओं ने जंपिंग मकड़ियों की दो नई प्रजातियों की खोज की है। यह खोज कुलाथुपुझा में दक्षिणी पश्चिमी घाट के शेंदुर्नी वन्यजीव अभयारण्य में की गई है।



नई प्रजातियाँ को निम्न लिखित नाम प्रदान किए गए हैं :- हैब्रोसेस्टम सह्याद्री और इरुरा शेंदुर्नी ।

इस प्रजाति की मकड़ियों से संबंधित अन्य जानकारी :- यह पहला मौका नहीं है जब इस प्रकार की प्रजाति की प्राप्ति हो थी है जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (ZSI) के शोधकर्ताओं ने कुछ समय पहले ही भारत के दक्षिणी राज्य कर्नाटक के मुकाम्बिका वन्यजीव अभयारण्य से फिटेला धृतिया और तमिलनाडु के सलेम ज़िले से फिटेला प्लैटनिकी नामक जंपिंग स्पाइडर की दो नई प्रजातियों की खोज की थी ।

ये दोनों प्रकार की प्रजातियाँ की मकड़ियाँ साल्टिसिडे परिवार के फिटेला वंश से संबंधित है . इन मकड़ियों की विशेषता छोटे या मध्यम आकार का होना साथ ही यह मकड़ियाँ रंगीन होती हैं।

इन मकड़ियाँ के निवास स्थान :- झाड़ियों, घास की पत्तियों और पेड़ की छालों के नीचे निवास करती हैं।

इन मकड़ियों की विशेषता:- इन मकड़ियों का सिर गोल आकार का या अंडाकार आकार का होता है तथा अपेक्षाकृत अन्य मकड़ियों की तुलना में उभरा हुआ होता है . इनका पेट अंडाकार या लंबा हो सकता है।

इन मकड़ियों की विशेषता इनमे चार जोड़ी आँखों का होना होता है जिसमे से तीन जोड़ी आँखे स्थिर एवं एक जोड़ी आँखे गतिशील होती है। ये मकड़ी अपनी तीक्ष्ण दृष्टि के कारण ही छलांग लगाने में सक्षम होती हैं जिस कारण इन्हे जंपिंग मकड़ी कहा जाता है ।

Result Mitra